

Sanskritadina Acharanastavam

——
संस्कृतिदिनाचरणस्तवम्

——
Document Information



Text title : saMskRRitadinAcharaNastavam

File name : saMskRRitadinAcharaNastavam.itx

Category : misc, sanskritgeet

Location : doc_z_misc_general

Author : Narayanan N

Acknowledge-Permission: Narayanan N

Latest update : August 11, 2024

Send corrections to : sanskrit at cheerful dot c om

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

Please help to maintain respect for volunteer spirit.

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

August 12, 2024

sanskritdocuments.org



संस्कृतदिनाचरणस्तवम्



मुनिवरपोषित चित्तविकार समुज्वल सद्गुण रामकथाम्
प्रणवमडत्व विधातृ जगत्पति शङ्करभासित कल्पलताम् ।
सुमतिशोभित सत्त्वसनातन द्रव्यकथामृत लोडडितम्
जय जय भारतकीर्तिविराजित सर्गविचारदिनाचरणम् ॥ १ ॥

गुणमडिमोदय वेदपुराणसरित्पतिविस्तृत तोयनिभम्
सकलमुनीश्वर कीर्तनवन्दित श्रेष्ठकथार्जित भासयुतम् ।
नतिनिभृतानन पार्षदयूथ समग्र्यसद्योषविधानतलम्
जय जय वेदविडायसि विश्रुतमन्त्रपवित्रदिनाचरणम् ॥ २ ॥

भङ्गजनयर्थित कीर्तिलताभिल यारुच्यतुष्यदनाभभृतम्
निभिलतलानृतपापविमोचनकाव्यसुधामल शक्तियुते ।
द्विजवर्यवितजालमृदुस्वन धातृसुताक्षरधन्यप्रते
जय जय शङ्कर उम्बरवादन नादयतुर्दशसूत्रयुते ॥ ३ ॥

अभिलतपोबल सिद्धिनिबन्धित शास्त्रविशेषविधिप्रयुरे
उपनिषदां प्रततीततिपुष्पित रम्यमनोडरकान्तियुते ।
मुनिवरमुष्यतपस्थितसंगत युक्तिविचारविशेषतमम्
जय जय सत्ययुगेषु प्रयालित संस्कृतियुक्तदिनाचरणम् ॥ ४ ॥

वररुचिवार्तिकभाष्यपतञ्जलि पाणिनिसूत्रविशेषधृतम्
नटनकलालय नाट्यविशेष मनोडर विस्तृत शास्त्रभृतम् ।
गदशमनप्रतिपादित वेदसङ्कुडुम चित्रकङ्कालतलम्
जय जय पुष्कलसाडितिनिर्भर ग्रन्थसमेतदिनाचरणम् ॥ ५ ॥

सडितमनस्सुभ शान्तिसमुत्थित योगविशेषण कामदुगा-
अतिवरसंभङ्गवेगयतुष्किय पूरित बन्धुर शास्त्रमतम् ।
डवनरसप्रतिपादितलक्षण कारिकया परिपुष्टधिया
जय जय नित्यं प्रतिघैर्विषयैः सूरिभिः घुषितदिनाचरणम् ॥ ६ ॥

गुणगण्डकर्मसु बद्धविक्रस्वर पूरितबन्धित काव्ययुते
शमयम मोक्षसमुन्नति तारक चिन्तित संगत ध्यानरते ।
प्रतिदिनराग गभस्तिभिरुत्थित सर्वयलत्पदशक्तियुते
जय जय सस्यवितानित कोमल सूक्ष्मपरिस्थितिरैक्यदिनम् ॥ ७ ॥

धनुगुणबन्धित बाणानियुक्त विदारणसैन्य विजेतुपथाम्
वरुणविभेदक पाशुपतस्थित पन्नग गारुड ब्रह्मयुतम् ।
मनुजमनोभव धारणपोषित आणवनाशकतुल्यबलम्
जय जय बुद्धिविशेष समार्जित शेषिविधान दिनाचरमम् ॥ ८ ॥

शृणु शृणु मास्मर यित्तसमाधि विशेषतपोमय सिद्धवरम्
वद वद ललित सम्मिलितोदय सुक्ष्मतलस्थित बोधगिरा ।
पठतु सदा निजशक्तिनिबन्धित भारतकाव्य विशिष्टसुधाम्
जय जय मंगलसूक्तिविराजित राजयपवित्र दिनाचरणम् ॥ ९ ॥

जनडितसम्पत्तिदान समुज्वलशासनशोभित राष्ट्रडिते
गुणगण्ड यूपण मर्दन पीडन मुक्तिविधान व्यवस्थितये ।
समतुलितैकमनस्थितिपूरित नीतिसुतार्थपदस्थितये
जय जय लोकडिताय विशिष्ट वनान्तर सम्पदसुभमिलिते ॥ १० ॥

by Narayanan N

—
Sanskritadina Acharanastavam
pdf was typeset on August 12, 2024
—

Please send corrections to sanskrit@cheerful.com

